

स्मृति दिवस पर आव्यक्त बापदादा के महावाक्य

आज सर्व बच्चों के स्नेही मात-पिता अपने स्नेही बच्चों के स्नेह के दिल की आवाज़ और स्नेह में अनमोल मोतियों की मालायें देखे-देख बच्चों को स्नेह का रिटर्न विशेष वरदान दे रहे हैं — “सदा समीप भव, समान समर्थ भव, सदा सम्पन्न संतुष्ट भव।” सबके दिल का स्नेह आपके दिल में संकल्प उठते ही बापदादा के पास अति तीव्रगति से पहुँच जाता है। चारों ओर के देश-विदेश के बच्चे आज प्यार के सागर में लवलीन हैं। बापदादा, उसमें भी विशेष ब्रह्मा माँ बच्चों को स्नेह में लवलीन देख स्वयं भी बच्चों के लव में, स्नेह में समाये हुए हैं। बच्चे जानते हैं कि ब्रह्मा माँ का बच्चों में विशेष स्नेह रहा और अब भी है। पालना करने वाली माँ का स्वतः ही विशेष स्नेह रहता ही है। तो आज ब्रह्मा माँ एक-एक बच्चे को देख हर्षित हो रही है कि बच्चों के मन में, बुद्धि में, दिल में, नयनों में मात-पिता के सिवाए और कोई नहीं है। सब बच्चे ‘एक बल एक भरोसे से आगे बढ़ रहे हैं’ अगर कहाँ रुकते भी है तो मात-पिता के स्नेह का हाथ फिर से समर्थ बनाए आगे बढ़ा देता है।

आज मात-पिता बच्चों के श्रेष्ठ भाग्य के गीत गा रहे थे। क्योंकि आज का दिवस विशेष सूर्य, चन्द्रमा का बैकबोन होकर सितारों को विश्व के आकाश में प्रत्यक्ष करने का दिन है। जैसे यज्ञ की स्थापना के आदि में ब्रह्मा बाप ने बच्चों के आगे अपना सब कुछ समर्पित किया अर्थात् ‘विल’ की। ऐसे आज के दिवस पर ब्रह्मा बाप ने बच्चों को सर्वशक्तियों की विल की अर्थात् विल पावर्स दी। आज के दिवस नयनों द्वारा और संकल्प द्वारा बाप ने बच्चों को विशेष ‘सन शोज फ़ादर’ की विशेष सौगात दी। आज के दिवस बाप ने प्रत्यक्ष साकार रूप में करावनहार का पार्ट बजाने का प्रत्यक्ष रूप दिखाया। ब्रह्मा बाप भी आज के दिन प्रत्यक्ष रूप में करावनहार बाप के साथी बने, करनहार निमित्त बच्चों को बनाया और करावनहार मात-पिता साथी

बने। आज के दिन ब्रह्मा बाप ने अपनी सेवा की रीति और गति परिवर्तन की। आज के दिवस विशेष ब्रह्मा बाप देह से सूक्ष्म फ़रिश्ता स्वरूप धारण कर ऊँचे वतन, सूक्ष्मवतन निवासी बने, किसलिए? बच्चों को तीव्रगति से ऊँचा उठाने के लिए। बच्चों को फ़रिश्ते रूप से उड़ाने के लिए। इतना श्रेष्ठ महत्व का यह दिवस है! सिर्फ़ स्नेह का दिवस नहीं लेकिन विश्व की आत्माओं का, ब्राह्मण आत्माओं का और सेवा की गति का परिवर्तन ड्रामा में नून्धा हुआ था, जो बच्चे भी देख रहे हैं। विश्व की आत्माओं के प्रति बुद्धिवानों की बुद्धि बने। बुद्धि का परिवर्तन हुआ, सम्पर्क में आये सहयोगी बने। ब्राह्मण आत्माओं में श्रेष्ठ संकल्प द्वारा तीव्रगति से वृद्धि हुई। सेवा के प्रति 'सन शोज फ़ादर' की गिफ्ट से विहंग-मार्ग की सेवा आरम्भ की। यह गिफ्ट सेवा की लिफ्ट बन गई। परिवर्तन हुआ ना! अब आगे चल सेवा में और परिवर्तन देखेंगे।

अभी तक आप ब्राह्मण-आत्मायें अपने तन-मन की मेहनत से प्रोग्राम्स बनाते हो, स्टेज तैयार करते हो, निमंत्रण कार्ड छपाते हो, कोई वी.आई.पी. को बुलाते हो, रेडियो, टी.वी. वालों को सहयोगी बनाते हो, धन भी लगाते हो। लेकिन आगे चल आप स्वयं वी.आई.पी. हो जायेंगे। आपसे बड़ा कोई दिखाई नहीं देगा। बनी-बनाई स्टेज पर दूसरे लोग आपको निमंत्रण देंगे। अपने तन-मन-धन की सेवाओं की स्वयं ऑफ़र करेंगे। आपकी मिन्नते (request) करेंगे। मेहनत आप नहीं करेंगे, वह रिक्वेस्ट करेंगे कि आप हमारे पास आओ। तब ही प्रत्यक्षता की आवाज़ बुलंद होगी और सबकी अटेन्शन आप बच्चों द्वारा बाप तरफ़ जायेगी। यह ज़्यादा समय नहीं चलेगा। सबकी नज़र बाप तरफ़ जाना अर्थात् प्रत्यक्षता होना और जय-जयकार के चारों ओर घण्टे बजेगे। यह ड्रामा का सूक्ष्म राज़ बना हुआ है। प्रत्यक्षता के बाद अनेक आत्माएं पश्चाताप करेंगी। और बच्चों का पश्चाताप बाप देख नहीं सकता। इसलिए परिवर्तन हो जायेगा। अभी आप ब्राह्मण-आत्माओं की ऊँची स्टेज सदाकाल की बन रही है। आपकी ऊँची स्टेज सेवा की स्टेज के निमंत्रण दिलायेगी। और बेहद विश्व की स्टेज पर जय-जयकार का पार्ट बजायेंगे। सुना, सेवा का परिवर्तन।

बाप के अव्यक्त बनने के ड्रामा में गुप्त राज़ भरे हुए थे। कई बच्चे सोचते हैं— कम से कम ब्रह्मा बाप छुट्टी तो लेके जाते। तो क्या आप छुट्टी देते? नहीं देते ना। तो बलवान कौन हुआ? अगर छुट्टी लेते तो 'कर्मातीत' नहीं बन सकते। क्योंकि ब्लड-कनेक्शन से पद्मगुणा ज़्यादा आत्मिक-कनेक्शन होता है। ब्रह्मा को तो कर्मातीत होना था। या स्नेह के बंधन में जाना था? ब्रह्मा बाप भी कहते हैं — ड्रामा ने कर्मातीत बनाने के बंधन में बाँधा। और बाँधा कितने टाइम में! समय होता तो और पार्ट हो जाता। इसलिए घड़ी का खेल हो गया। बच्चों को भी अन्जान बना दिया, बाप को भी अन्जान बना दिया। इनको कहते हैं — वाह, ड्रामा वाह! ऐसा है ना। जब 'वाह ड्रामा वाह' है तो कोई संकल्प उठ नहीं सकता। फुलस्टाप लगा दिया ना! नहीं तो कम-से-कम बच्चे पूछ तो सकते थे कि क्या हो रहा है? लेकिन बाप भी चुप, बच्चे भी चुप रहे। इसको कहते हैं — ड्रामा का फुलस्टाप। उस घड़ी तो फुलस्टाप ही लगा ना। पीछे भल क्वेश्चन कितने भी उठे लेकिन उस घड़ी नहीं। तो 'वाह ड्रामा वाह' कहेंगे ना! 'बाबा-बाबा' कह बुलाया भी पीछे, पहले नहीं बुलाया। यह ड्रामा की विचित्र नूँध होनी ही थी और होनी ही है। परिवर्तनशील ड्रामा पार्ट को भी परिवर्तन कर देता है।

यह सब टीचर्स अव्यक्त रचना है — मैजारिटी। साकार की पालना लेने वाली टीचर्स बहुत थोड़ी हैं। फास्ट गति से पैदा हुई हो। क्योंकि संकल्प की गति सबसे फास्ट है। आदि रत्न है मुख-वंशावली, और आप हो संकल्प की वंशावली। इसलिए ब्रह्मा की दो रचना गई हुई हैं। एक मुख वंशावली, एक संकल्प द्वारा सृष्टि रची। हो तो ब्रह्मा की रचना, तब तो ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी कहलाते हो। शिवकुमारी तो नहीं कहलाते हो ना। डबल फ़ारेनर्स भी सब संकल्प की रचना हैं। ऐसे तीव्रगति से सब टीचर्स आगे बढ़ रही हो? जब रचना ही तीव्रगति की हो तो पुरुषार्थ भी तीव्रगति से होना चाहिए। सदा चह चेक करो कि सदा तीव्र पुरुषार्थी हूँ वा कभी-कभी हूँ? समझा! अब 'क्या' 'क्यों', का गीत खत्म करो। 'वाह-वाह' के गीत गाओ। अच्छा!

चारों ओर के सर्व स्नेह और शक्ति सम्पन्न श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा बाप के साथ-साथ तीव्रगति से परिवर्तन के साथी समीप आत्माओं को, सदा अपनी उड़ती

कला द्वारा अन्य आत्माओं को भी उड़ाने वाले निर्बन्धन उड़ते पंछी आत्माओं को, सदा 'सन शोज फ़ादर' की गिफ्ट द्वारा स्वयं और सेवा में तीव्रगति से परिवर्तन लाने वाले, ऐसे सर्व लवलीन बच्चों को इस महत्त्व दिवस के महत्त्व के साथ मात-पिता का विशेष याद-प्यार और नमस्ते।

हुबली ज़ोन से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

सदा अपने को हर कदम में पद्यों की कमाई करने वाले पद्मपद्म भाग्यवान समझते हो? यह जो गायन है- हर कदम में पद्म... किसके लिए गायन है? सारे दिन में कितने पद्म इकट्ठे करते हो? संगमयुग बड़े-ते-बड़े कमाई के सीजन का युग है। तो सीजन के समय क्या किया जाता है? इतना अटेन्शन रखते हो? हर समय यह याद रहे कि 'अब नहीं तो कब नहीं।' जो घड़ी बीत गई वह फिर से नहीं आवेगी। एक घड़ी व्यर्थ जाना अर्थात् कितने कदम व्यर्थ गये? पद्म व्यर्थ गये! इसलिए हर घड़ी यह स्लोगन याद रहे — 'जो समय के महत्त्व को जानते है वह स्वतः ही महान बनते हैं।' स्वयं को भी जानना है और समय को भी जानना है। दोनों ही विशेष हैं। इस स्मृति दिवस पर विशेष सदा समर्थ बनने का श्रेष्ठ संकल्प किया? व्यर्थ संकल्प, बोल, सब रूप से व्यर्थ को समाप्त करने का दिन है। जब नालेज मिल गई कि व्यर्थ क्या है, समर्थ क्या है- तो नालेजफुल आत्मा कभी भी समर्थ को छोड़ व्यर्थ तरफ़ नहीं जा सकती। और जितना स्वयं समर्थ बनेगे उतना औरों को समर्थ बना सकेंगे। ६३ जन्म गँवाया और समर्थ बनने का यह एक जन्म है। तो इस समय को व्यर्थ तो नहीं करना चाहिए ना! अमृतबेले से लेकर रात तक अपनी दिनचर्या को चेक करो। ऐसे नहीं कि सिर्फ रात्रि को चार्ट चेक करो लेकिन बीच-बीच में चेक करो, बार-बार चेक करने से चेंज कर सकेंगे। अगर रात को चेक करेंगे तो जो व्यर्थ गया वह व्यर्थ के खाते में ही हो जायेगा। इसलिए बापदादा ने बीच-बीच में ट्रैफिक कण्ट्रोल का टाइम फिक्स किया है। ट्रैफिक कण्ट्रोल करते हो या दिन में बिज़ी रहते हो? अपना नियम बना रहना चाहिए। चाहे टाइम कुछ बदली हो जाय लेकिन अगर अटेन्शन रहेगा तो कमाई जमा होगी। उस समय अगर कोई काम है तो आधे घण्टे

के बाद करो लेकिन कर तो सकते हो। घड़ी के आधार पर भी क्यों चलो। अपनी बुद्धि ही घड़ी है, दिव्य बुद्धि की घड़ी को याद करो। जिस बात की आदत पड़ जाती है तो आदत ऐसी चीज़ है जो न चाहते भी अपनी तरफ़ खींचेगी। जब बुरी आदत रहने नहीं देती, अपनी तरफ़ आकर्षित करती है तो अच्छे संस्कार क्यों नहीं अपना बना सकते। तो सदा चेक करो और चेंज करो तो सदा के लिए कमाई जमा होती रहेगी। अच्छा!

